SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

वर्तमान परिवेश में ध्रुवपद गायन शैली की महत्वता

VIBHA PANDEY [1], PROF PANDIT PREM KUMAR MALLICK[2]

[1]Research Scholar, Department of Music and Performing Arts, University of Allahabad, Prayagraj
[2]Professor, Department of Music and Performing Arts, University of Allahabad, Prayagraj

सार

ध्रुपद गायन शैली वर्तमान समय में प्रचलित हमारे पवित्रतम भारतीय शास्त्रीय संगीत की सबसे प्राचीनतम शैली होने के साथ ही साथ अन्य गायन एवं वादन शैलियों का आधार भी है। क्योंकि इसकी गायकी में हजारों वर्षों पूर्व वैदिक कालीन संगीत का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसकी शुद्धता, पवित्रता, उच्चता एवं गम्भीरता के कारण वर्तमान में प्रचलित समस्त गायन शैलियों में इसे सूर्य के समान माना जाता है। वर्तमान समय में प्रचलित न केवल अन्य गायन-वादन शैलियों अपितु नृत्य में भी ध्रुपद का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। अतः संगीत के प्रत्येक अध्ययनकर्ता के लिय इस ध्रुपद का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। अतः संगीत को प्रत्येक अध्ययनकर्ता के लिए इस ध्रुपद रूपी आधार शैली को जानने की नितान्त आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से इसी दृष्टि से यह अवगत कराने का प्रयास किया गया है कि आज वर्तमान परिवेश में ध्रुपद का क्या महत्व तथा स्थान है। क्यों आज के भौतिकवादी युग में ध्रुपद की महत्वता बढ़ जाती है तथा किन-किन रूपों में यह अन्य शैलियों में रचा-बसा है जिसे संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

शोध उद्देश्य: प्रस्तुत शोध-पत्र लेखन का मुख्य उद्देश्य वर्तमान परिवेश में ध्रुपद जैसी समृद्धशाली गायन शैली का महत्वता को उजागर करना है तथा इस गायन शैली का आज अन्य गायन शैलियों के सापेक्ष क्या स्थान है उसका वर्णन करना है।

बीज शब्द- *ध्रुपद, वर्तमान, शैली, परिवेश, घराने*

प्रस्तावना

वर्तमान परिवेश में ख्याल, तराना, ठुमरी एवं टप्पा इत्यादि शैलीयों का प्रचार-प्रसार तो सर्वाधिक रूप से हुआ एवं उन पर कई शोध पत्र भी प्रकाशित हो चुके हैं किन्तु ध्रुपद जैसी समृद्धशाली गायन शैली जिसका विकास अन्य गायन शैलियों के बढ़ते बर्चस्व के कारण बीच में अवरूद्ध भी हो गया। आज ध्रुपद पुनः लोकप्रिय कैसे हुआ वर्तमान में प्रचलित अन्य शैलियों में इसका क्या महत्व एवं स्थान रहा है। यह जानने के लिये हमें वर्तमान परिवेश में ध्रुपद का क्या महत्व है इसे समझना पड़ेगा।

विषय प्रवेश

भारतीय शास्त्रीय संगीत की वर्तमान में प्रचलित समस्त गायन शैलियों में से सबसे प्राचीनतम तथा सम्मानित गायन शैली ध्रुपद गायन शैली है। जो अपनी गहनता, आध्यात्मिकता तथा शुद्धतम रूप के लिए जानी जाती है। जिस प्रकार से किसी भवन की मजबूती उसके नींव पर निर्भर करती है उसी प्रकार से वर्तमानकालीन समस्त गायन शैलियों की नींव भी ध्रुपद गायन शैली है। जिसके लिए इस आधारशिला रूपी ध्रुपद गायन शैली के समक्ष समस्त गायन शैलियों को नतमस्तक होना ही पड़ेगा। आज के भौतिकवादी युग में जहाँ संगीत तेज लयबद्ध है वहाँ ध्रुपद का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। क्योंकि यह शैली न केवल हमारे गायकी का परिष्कार अपितु आत्म-चिंतन आत्म अनुशासन और आध्यात्मिकता का मार्ग भी प्रशस्त कराती है।

संस्कृत भाषा के 'ध्रुवपद' शब्द का ही हिन्दी रूपान्तरण ध्रुपद है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है 'ध्रुव' एवं 'पद'। 'ध्रुव' का अर्थ स्थिर तथा 'पद' शब्द गीत की पंक्ति, चरण अथवा तुक का बोध करवाता है। संक्षेप में 'जिस गीत की एक विशिष्ट चाल स्थिर, धीमी अथवा गाने की पद्धति ठहरी हुई है तथा जो अपरिवर्तनीय है। उसे ही विद्वानों ने 'ध्रुवपद' कहा है।'[1]

मुहम्मद करम इमाम के अनुसार ध्रुवपद में चार-पाँच चरण होते हैं। चरण का अर्थ 'तुक' है, प्रथम तुक को स्थल कहते हैं जो जनसाधारण में 'आस्ताई कहलाती है, दूसरी तुक को अन्तरा तीसरी तुक को भाग और चौथी तुक को आभोग कहते हैं। तुक को खंड भी कहा जाता है।[2]

ध्रुपद के चार भाग स्थाई, अंतरा, संचारी और आभोग है। गायन शैली का स्वरूप भी चार भागों में विभक्त है जो क्रमशः नोम-तोम, बंदिश, लयकारी तथा उपज है। इस शैली के गायक 'ध्रुपदिया' कहलाता है जिसके लिए मध्ययुग में कलावत संज्ञायी। ध्रुपद की विभिन्न शैलियों को

'बानी' कहा जाता था। ऐसी बानियाँ चार थीं- गोबरहार, डागुर, खंडार और नौहार।[3] इन्हीं बानियों से वर्तमान ध्रुपद के घरानों का भी प्रादुर्भाव हुआ। गोबरहार बानी का सम्बंध तानसेन, डागुर बानी का बृजचन्द्र, खण्डार बानी का राजा सम्मोखन सिंह तथा नौहार बानी का सम्बंध श्रीचन्द से जोड़ा जाता है।

मानव की निरंतर परिवर्तनशील प्रवृत्ति एवं उनसे प्रभावित अभिरूचियों से वैदिक काल से 13वीं शताब्दी तक अनेक गायन शैलियाँ अस्तित्व में आई यथा-जाति एवं ध्रुवा गान जिसका प्रचलन 'भरतमुनि' (200 से 400 ई0पू0) के काल में था इसके पश्चात् मतंग (6वीं शताब्दी) तथा शारंगदेव (13वीं शताब्दी) के काले में प्रबन्ध गायन का प्रचलन आया। प्रबन्ध गायन शैली के समय ध्रुव प्रबन्ध के 16 भेद माने जाते थे। इसी ध्रुव प्रबन्ध से ध्रुपद का अस्तित्व माना जाता है। विद्धानजन ध्रुपद शैली के उन्नायक व प्रवर्तक कलाप्रिय नरेश 'राजा मानसिंह तोमर' (1486 ई0 से 1516 ई0) को मानते हैं। इनका ग्रंथ 'मानकुतूहल' ध्रुपद से संबंधित है। जिसका फारसी अनुवाद 'फकीर उल्ला' ने 'राग दर्पण' नामक ग्रंथ में किया।

वर्तमान परिवेश में ध्रुपद की महत्वता

वर्तमान समय में अनेक प्रसिद्ध संगीत विद्धानजनों ने ध्रुपद के महत्व एवं देन को अंगीकार किया है तथा कलाकारिता व संगीत शिक्षण के क्षेत्र में ध्रुपद को अनिवार्य माना है। ध्रुपद के नोम-तोम का आलाप, स्वर-बढ़त का अनूठा तरीका, उत्कृष्ट साहित्य, लयकारियों का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित क्रम आज अन्य गायन व वादन शैलियों के कलाकार अपना रहे है। वर्तमान में प्रचलित समस्त गायन-वादन शैलियों का मूल ध्रुपद ही है। आज सितार, सरोद, तबला, वीणा, गिटार एवं संतूर जैसे अनेकानेक वाद्ययंत्रों के कलाकार अपने वादन में आलापों, जोड़ालापों एवं झाले के वादन में ध्रुपद शैली के ही अंगों को क्रियान्वित करके बजा रहे हैं। जिनके बहुत से प्रमाण हमें सुनने और देखने को प्राप्त होते हैं कुछ का विवरण इस प्रकार है-

तबला वादन के क्षेत्र में प्रथम पद्मविभूषण प्राप्त बनारस घराने के कलाकार पं0 किशन महाराज जी ने 26 अगस्त सन् 1990 रविवार के दिन दुरदर्शन में दिल्ली के राष्ट्रीय कार्यक्रम 'साधना' सीरियल में कहा था कि हमारे तबले में भी आलाप, जोड़ व झाला सभी होता है जो ध्रुपद गायन शैली की देन है। गिटार वाद्य को भारतीय संगीत में पहचान दिलाने वाले एवं ग्रैमी अवार्ड से पुरस्कृत पं0 विश्वमोहन भट्ट जी अपने वादन में, दो सप्तको की मीड़े, गमकयुक्त स्वर विन्यास तथा लयकारियों का प्रयोग करते हैं जिसे ध्रुपद का प्रभाव माना जा सकता है। वे ध्रुपद के साथ ही साथ गिटार पर धमार शैली का भी वादन करते हैं। सितार वादन में विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाने वाले तथा देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' प्राप्त करने वाले पं0 रविशंकर जी ने ग्वालियर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले 'तानसेन समारोह' में 1990 में ध्रुपद गायन शैली का वादन सितार पर किया तथा उनके संग प्रसिद्ध नर्तक स्व0 दुर्गालाल जी ने पखाबज पर संगत प्रदान की। 18 मार्च 1991 में दिल्ली में आयोजित 'ध्रुपद समारोह' में प्रसिद्ध संतूर वादक ओमप्रकाश चैरसिया ने अपने संतूर पर ध्रुपद शैली के अंगों का वादन किया तथा उसी समारोह में 1989 तथा 1991 में उस्ताद अमजद खां व रहमत खाँ ने सरोद पर ध्रुपद शैली को बजाया। विश्वविख्यात सुरबहार वाद सज्जाद मोहम्मद जी भी अपने सुरबहार वादन पर ध्रुपदांग वीणा का बाज करते थे।

वादन शैलियों के अतिरिक्त वर्तमान गायन शैलियों में भी ध्रुपद का प्रभाव सर्वत्र दिखाई देता है कि किस प्रकार से आज समस्त संगीत जगत ध्रुपद को अपना आधार मान रही है तथा अन्य शैलियों के कलाकार अपनी गायकी को परिष्कृत करने हेतु ध्रुपद के ही अंगों का प्रयोग अपनी गायन-वादन शैलियों में कर रहे हैं जो उनके प्रस्तुतीकरण में देखने को प्राप्त हो रहा है। आज कई ख्याल गायक है जो ख्याल गायकी में ध्रुपद के नोम-तोम, बढ़त तथा लयकारी, गमकयुक्त सरगम तथा मीड़ो का प्रयोग कर रहे हैं जिनके कुछ प्रमाण आगे निम्नवत है -

मेवाती घराने को विश्व में पहचान दिलाने वाले तथा कई मान-सम्मान से सुशोभित ख्यातिबद्ध कलाकार पं0 जसराज जी की गायकी में ध्रुपद के प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वे अपने गायन में ध्रुपद गायन शैली के ही समान लयकारी युक्त सरगम, गमकयुक्त तानें तथा दो सत्पकों की मीड़ो का प्रयोग करते हैं जो ध्रुपद के नोम-तोम के आलापों का जो अन्तिम भाग 'बोलतान' होता है उसके जैसा प्रतिभासित होता है। हाल ही में कोरोना काल की महामारी के समय 17 अगस्त 2020 को वे दिवंगत हो गये। आज भी जब हम उनकी रिकार्डिंग सुनते

हैं तो पाते हैं कि वे ख्याल की बंदिश से पूर्व 'अनन्त हरिः ओम् हरि नारायण' इत्यादि जो ईश्वरवाची शब्दों से प्रयुक्त आलाप गाते हैं। ध्रुपद के नोम-तोम के आलाप का ही प्रभाव परिलक्षित होता है। बनारस घराने के ख्यातिबद्ध कलाकार पं0 राजन-साजन मिश्रा जो मिश्र-बंधु के नाम से भी लोकप्रिय हैं उनके ख्याल गायन में भी लय की कांट-छांट, हुंकारमयी गमकयुक्त सरगम, खुली आवाज का गायन तथा मीड़ो की प्रधानता में ध्रुपद का ही प्रभाव दिखाई देता है। आगरा घराना जोकि आज ख्याल के मुख्य घरानों में से एक है। एक समय पहले इस घराने में भी ध्रुपद-धमार गाने की ही परम्परा थी। आगरा घराने के आदि पुरूष कहे जाने वाले अकबर काल के हाजी सुजान खाँ साहब जी ध्रुपद-धमार के विशेषज्ञ माने जाते थे। इस घराने में ख्याल गायन को सर्वप्रथम 'धग्धे खुदाबक्श' द्वारा प्रतिस्थापित किया गया जिन्होंने ग्वालियर ने नत्थन पीरबक्ख से 12 वर्षों तक ख्याल गायन की शिक्षा ली तत्पश्चात् आगरा आकर अपनी आगे की पीढ़ियों को ख्याल गायकी की शिक्षा दी जिससे आगरा घराना ख्याल के मुख्य घरानों में सम्मिलित हो गया किंतु आज भी आगरा घराने के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत अधिकांश ख्याल गायन का प्रदर्शन नोम-तोम के आलाप द्वारा ही आरम्भ होता है। आगरा घराने के सूर्य कहे जाने वाले उ0 फैयाज खान जी अपनी ख्याल गाय की में ध्रुपद के अंगों का प्रयोग करते थे वे ख्याल शैली के साथ ही ध्रुपद-धमार गाने में भी दक्ष थे। फैयाज खान जी की शैली का अनुसरण करने वाले गायक आज भी ख्याल की बंदिश प्रारम्भ करने से पूर्व ध्रुपादिक नोम-तोम आलाप का सहारा लेते हैं जैसे इसी घराने की प्रो0 सुमिति मुटाटकर, दिपाली नाग, एस.एस. रतनजंकर एवं विलायत हुसैन खाँ इत्यादि। इसके अतिरिक्त जयपुर घराने के उ0 अल्लादियों खाँ, किराने घराने के सुप्रसिद्ध तथा देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न प्राप्त पं0 भीमसेन जोशी, ग्वालियर घराने के लक्ष्मण कृष्णराव शंकर पंडित आदि कलाकार भी नोम-तोम के संक्षिप्त रागवाचक आलाप के बाद ख्याल प्रारम्भ करते थे, जिसे अप्रत्यक्ष रूप से ध्रुपद का प्रभाव कहा जा सकता है।[4]

गायन-वादन के अतिरिक्त नृत्य के क्षेत्र में भी ध्रुपद का प्रभाव परिलक्षित होता है। आज शास्त्रीय नृत्य कत्थक तथा बैले डांस में भी परम्परागत तालों के अतिरिक्त चारताल तथा धमार आदि का प्रयोग होने लगा है। देशभक्ति गीत तथा भजनों में भी दादरा, कहरवा जैसी प्रचलित तालों के अतिरिक्त सूलताल, धमार एवं चारताल आदि तालों का सामंजस्य आज देखने को मिल रहा है। ये समस्त विवरण हमारे सम्मुख इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करते है कि किस प्रकार से आजकल ध्रुवपद शैली की ओर समस्त गायन, वादन एवं नृत्यादि संगीत-क्षेत्रों का झुकाव प्रारम्भ हुआ है चाहे इसे प्रयोग माने किन्तु वह ध्रुवपद के विकास की दिशा में शुभ संकेत है।[5]

यदि हम इतिहास को पलटकर देखें तो ज्ञात होता है कि मध्यकाल की समाप्ति तक ध्रुपद ने अपनी लोकप्रियता खो दी तथा उसका स्थान ख्याल गायन शैली ने ले लिया। ख्याल का प्रादुर्भाव ध्रुपद जैसी गम्भीर तथा शान्त रस प्रधान गायकी के प्रत्युत्तर व प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। किन्तु आश्चर्य इस बात पर है कि ख्याल का सम्पूर्ण खाका ध्रुपद का ही है। जब ख्याल गायन शैली में ध्रुपद शैली के अंगों को मिश्रित करके प्रस्तुत किया जाता है तो कुछ घरानेदार कलाकारों द्वारा उसे 'लंगड़ा ध्रुपद' या 'मुंडा (खंडित)' ध्रुपद की भी संज्ञा दी जाती रही है। कुछ विद्यानों के मतानुसार ध्रुपद की लयकारिता एवं कव्वाली की तान के सम्मिश्रण से ख्याल गायकी का निर्माण हुआ। ध्रुपद शैली के आलापों में जो उसका क्रमबद्ध बढ़त, राग के स्वरूप का विस्तार, गमकयुक्त लयकारी एवं मीड़ जिस विशुद्धतम रूप में समाहित है, वह निश्चित ही अन्य शैलियों के लिए मार्गदर्शक है। स्वयं में धैर्य, ठहराव, गूँज, गहराई एवं, गम्भीरता आदि ध्रुपद गायन की ही देन है। जिसे अन्य गायन शैलियों ने भी अपनाया है। यदि सौन्दर्य की दृष्टि से देखे तो आज लगभग प्रत्येक गायन-वादन शैलियों में प्रयुक्त की जाने वाली गमक, मीड़ो, जमजमा, अलंकार, खटका इत्यादि सभी ध्रुपद गायन शैली से ही ग्रहण किये गए हैं।

ध्रुपद गायन शैली के कुछ महत्वपूर्ण पहलू

आध्यात्मिकता- यह शैली आध्यात्मिकता से गहराई से जुड़ा हुआ है। इसका मुख्य उद्देश्य श्रोता को भौतिक दुनिया से दूर ले जाकर उन्हें भक्ति से जोड़ना है। ध्रुपद एक जप या आराधना से परिपूर्ण शैली है। एकाग्रता में सुधार - ध्रुपद के अन्तर्गत राग के सम्पूर्ण स्वरूप का विस्तार करने, धीरे-धीरे बढ़त अनूठी लयकारियों, एवं नोम-तोम के आलाप को सुनने एवं अभ्यास करने से एकाग्रता की शक्ति में भी वृद्धि होती है। गहनता- इस शैली के अन्तर्गत, रागों को धीरे-धीरे और राग के सौन्दर्यों को पूर्ण रूप से अनुभव कर पाते हैं। तनाव कम कला - यह प्रतिष्ठित गायन शैली तनाव कम करने एवं मन को शांत रखने में सहायता प्रदान करती है।

निष्कर्ष

ध्रुपद गायन शैली न केवल संगीत की एक विधा है अपितु यह जीवन जीने का मार्ग भी प्रशस्त करती है। यह हमें आत्मसाक्षात्कार और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने का मार्ग भी प्रदान करती है। वर्तमान परिवेश के अन्तर्गत जब हम भौतिकवाद और तनाव से घिरे हुए हैं, ऐसे में यह शैली हमारे लिए और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। क्योंकि यह हमें आध्यात्मिकता और गहनता की ओर ले जाती है। अतः ध्रुपद ने जो सुदृढ़ मार्गदर्शन हमें दिया है उसके आभारी वर्तमान और भविष्य सदैव रहेंगे।

संदर्भ

1. शर्मा, अनीता, 'प्राचीन सांगीतिक परम्पराएं एवं ध्रुवपद शैली: एक अध्ययन' , पृष्ठ सं0 04
2. बृहस्पति, आचार्य, 'ध्रुवपद और उसका विकास', पृष्ठ सं0 241
3. परांजपे, डॉ0 शरच्चन्द्र श्रीधर, 'संगीत-बोध', पृष्ठ सं0 111
4. गर्ग, लक्ष्मीनारायण, 'हमारे संगीत रत्न', पृष्ठ सं0 116
5. तैलंग, मधु भट्ट, 'ध्रुवपद गायन परम्परा' पृष्ठ सं0 168

बृहस्पति, आचार्य, ध्रुवपद और उसका विकास, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1970
तैलंग, डॉ0 मधुभट्ट, ध्रुवपद गायन परम्परा, जयपुर, जवाहर कला केन्द्र, 1996
व्यास, भरत, ध्रुवपद समीक्षा, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, कैसरबाग लखनऊ, 226001, 1980
शर्मा, अनीता, प्राचीन सांगीतिक परम्पराएँ एवं ध्रुवपद शैली-एक अध्ययन, दिल्ली, संजय प्रकाशन, 2004
मल्लिक, पं0 प्रेम कुमार, दरभंगा घराना एवं बन्दिशों, कश्यप पब्लिकेशन, गाजियाबाद
चौरसिया, ओम प्रकाश, ध्रुवपद का विकास क्रम और आज की स्थिति, संगीत हाथरस, 1991
शर्मा, प्रो0 स्वतंत्र, भारतीय-संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, प्रयागराज,